UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 2.143

ADARSH VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

Current Global Reviewer

International Research Journal Registered & Recognized Higher Education For All Subjects & All Languages

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Editor in Chief

Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist. Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, | March. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research Refereed Multidiciplanary Journal

Editor in Chief
Mr. Arun B. Godam

ISSUE X , Volume IV (Half Yearly) Nov. 2017 To Apr. . 2018
Published on March. 2018

Editorial Office Address :
Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur, Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999
Email-
hitechresearch11@gmail.com

SHAURYA PUBLICATION Latur

Publisher
Shaury Publication
Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

Rs. 400/-

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chitta Ranjan Panda
P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous College , Cuttack – (Orissa)

B.J. Hirve
Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya, Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Pravin Diddeshwar Shete
Dept. of Zoology, Maharashtra Udaygiri Mahavidyalaya, Udgir, Dist. Latur

Maimanat Jahan Ara
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr U.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. Hanumant Mane
R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Dr. Sachin Kadam
Dept. of Hindi
Nagarpalika Art D.J. Malpani Comm. & B.N. Sarda Sci. College,
Sangmner, Dist. Ahmadnagar (M.S.)

www.rjournals.co.in

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, March. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

17	अज्ञेय की कहानियों में व्यक्त देश-विभाजन की त्रासदी	प्रा.आर.एम.खराडे	79
18	आधुनिक नारी की सशक्त तस्वीर - दौड	प्रा.डॉ.राजश्री भामरे	84
19	फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आँचलिकता का चित्रण	प्रा. सूर्यवंशी एस. एम.	88
20	मराठवाडे का लिंगायत समाज : एक अध्ययण	डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबुराव	93
21	"भारत सरताज जम्मू –कश्मीर के पर्यटक–स्थलों में पर्यटक और पर्यटन की संभावनाएं एवं चुनौतियां"	रवि कुमार	97
22	'मैं घूमर नाचूँ' उपन्यास में प्रताड़ित नारी	डॉ. एकता रानी	109
23	मीडिया का सामाजिक दायित्व	पूजा शर्मा	111
24	मीडिया और बाज़ार	दीपिका शर्मा	113

Scanned by CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, March. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

मराठवाडे का लिंगायत समाज : एक अध्ययण

डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबुराव
राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष, देगलूर महाविद्यालय,देगलूर ए ता. देगलूर जि. नांदेड, महाराष्ट्र.

-------- (20) ----------

मराठवाडे मे लातुर, नांदेड, औरंगाबाद, परभणी, बीड, जालना, हिंगोली, उस्मानाबाद इन आठ जिलों का समावेश है। मराठवाडा 1948 को हैदाबाद के निझाम शासन से मुक्त होकर स्वतंत्र भारत मे विलीन हो गया। औरंगाबाद मराठवाडे का प्रमुख औद्योगिक और प्रशासकिय विभाग है। मराठवाडे में स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापिठ, नांदेड, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ औरंगाबाद, परभणी कृषी विद्यापिठ, परभणी यह तीन विश्वविद्यालय है। मराठवाडे मे मराठा, दलित, ब्राम्हण, कोमटी, समाज के साथ लिंगायत समाज भी है। मराठवाडा कर्नाटक, तेलंगणा राज्य की सीमा के नजदिक है। कर्नाटक को बिदर जिलें से मराठवाडा की भौगोलिक सीमा लगकर है। कर्नाटक के बिदर जिले की भौगोलिक सीमा मराठवाडा के लातूर, उस्मानाबाद एंव नांदेड जिले से लगकर है। नैसर्गिकदृष्ट्या मराठवाडा अवर्षण और सुखाग्रस्त इलाका है। निजाम सरकार, सुखा, पाणी की कमी सरंजामी मानसिकता आदि का प्रभाव मराठवाडे मे रहनेवाले सभी समाज के लोगोंपर दिखाई देता है। साथही सीमावर्ती क्षेत्र मे रहनेवाले देगलूर, निलंगा, उदगीर, उमरगा, आदि तालुके के सभी लोगोंपर लगत के राज्य के संस्कृती का भी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इससे लिंगायत समाज भी छुटा नही।

मराठवाडा और लिंगायत समाज का अध्ययन करना इस अध्ययन विषय को पुर्ण रूप देने हेतू आवश्यक है। मराठवाडे से सम्बधित उपरी सभी बातों पर प्रकाश डालने के बाद मराठवाडे मे रहनेवाले लिंगायत समाज के बारे मे प्राप्त प्रदत्तों को स्पष्ट करना आसान होगा।

मराठवाडे मे आठ जिल्हे है, लेकिन उनमे से लातूर, नांदेड, और उस्मानाबाद जिले मे लिंगायत समाज की संख्या ओर जिलों की तुलना से अधिक है। लातूर, नांदेड, उस्मानाबाद जिलों को लिंगायतो का गाभा प्रदेश कहते है। इसी जिले से अनेक लिंगायत लोक मराठवाडे के अन्य जिलों मे जाकर बसे है, खासकर औरंगाबाद, जालना क्योंकि यह दोनों जिले औद्योगिकदृष्ट्यया विकसित है।

मराठवाडे मे लिंगायत समाज के सामाजिक स्तरीकरण के बाणी, जंगम और अन्य उपजाती के लोगों की अधिक संख्या है। जिसमे लिंगायत चिलवंत, दिक्षवंत, न्हासवंत, शिलवंत, लिंगायत ढोर कक्कय्या, मातंग चन्नय्या, गवळी, साळी, माळी, कोळी, तेली, कुंभार, न्हावी, पांचाळ, सुतार, फुलारी, बुरूड, बेडर, रेड्डी, शिंपी, गवंडी, आदि। जो 12 वी सदी मे अस्पृश्य थे। इसके साथ ही मराठवाडे के सभी जिलो मे जंगम समाज की संख्या अधिक मात्रा मे है। मराठवाडे के अनेक गांव मे लिंगायत समाज के लोग गांवप्रमुख के रूप मे पाटील, पोलिस पाटील, माली पाटील, मुकदम पाटील, देशमुख होनराव, महाजन, बिराजदार, आदि वतनदारी से सम्बधित आडनाम के है। आज इसका प्रमाण कुछ अंशतक घटता दिखाई देता है।

मराठवाडे के सभी जिलों मे लिंगायत मठ है। खासकर लातूर, उस्मानाबाद, नांदेड, परभणी मे अधिक है तो औरंगाबाद, जालना, बीड, हिंगोली, मे इसका प्रमाण कम है। मराठवाडे मे स्थित सभी मठों को स्थावर एंव जंगम मालमत्ता है। इन मठों का विरक्त शिवाचार्य और शरण परम्परा मे विभाजन होता है। लातूर शहर में कुल चार विरक्त मठ है। साथ ही निलंगा, भांतागळी, नागराळ, उदगीर, देवणी, उस्तूरी, हाणेगाव, देगलूर, कासारशिरसी, तमलूर, मुखेड, गडगा, जिडगा, साकोळ, जंवळी, मुरूड, उमरगा, आचलेर आदि जगहोंपर विरक्त मठ है। लातूर, नांदेड, बनवस, लाहोर, मरखेल, अहमदपूर, सास्तूर, उमरगा, चैनपूर, लिबाळा, पेठ, यावली आदि जगहोंपर बसवण्णा के मंदीर है। देवरहल्लाळी मे चन्नबसवण्णा की गुहा है। लिंगायत और शरण संस्कृती से सम्बधित बसवनाल, बसवंतेश्वर, बसवणवाडी, बसवंतवाडी, शरणपूर, अप्पावाडी, बाणेवाडी, यावली इन नामों के गांव औरंगाबाद, उस्मानाबाद, लातूर, जिलें मे है। वारकरी संप्रदाय से प्रभावित लिंगायत मठ औसा, येवली मे है। मराठवाडे में डॉ. शिवलिंग शिवाचार्य महाराज अहमदपूरकर, काशी जगद्गुरू, संत शिरोमणी मन्मथ स्वामी इनका

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, March. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

प्रभाव है। शरण सुरय्या, शरण उरीलिंगपेदी इन शरणों की यह भुमी है। अहमदपूर जिलें में शरण अल्लमप्रभु का भी मंदीर है। यह सभी लिंगायतों के श्रध्दा स्थान है। मराठवाडे कें लिंगायत समाज के स्तरीकरण के सभी लोगों पर वीरशैव विचारधारा एंव संस्कृती का बडा प्रभाव है। जिसका प्रभाव क्षेत्र लातूर शहर, उदगीर, निलंगा इन तालुके मे कम होता दिखाई देता है। वीरशैव विचारधारा एंव संस्कृती से प्रभावित अनेक मठ एंव मठाधिश मराठवाडे के सभी जिलों मे है।

मराठवाडे का लिंगायत समाज सदैव धार्मिक एंव अध्यात्मिक कार्यक्रमों मे व्यस्त रहता है। परमरहस्य पारायण, शिवनाम सप्ताह, शिवभजन, शिवपाठ, शिवकिर्तन, शिवजागर, बसवकथा का आयोजन होता है। किर्तनकार, प्रवचनकार, गायक, वादक, कथाकार, भजन करनेवाले, विणकरी एंव पारायणकारीयों की बडी संख्या मराठवाडे मे है। मराठवाडे में संत शिरोमणी मन्मथ स्वामी का समाधीस्थल बीड जिलें के मांजरसुंबा गांव मे है। संत शिरोमणी मन्मथ माउली के दर्शनहेतू डॉ. शिवलिंग शिवाचार्य महाराज अहमदपूरकर इनके नेतृत्व मे कार्तिक पोर्णिमा को बडी संख्या मे मराठवाडा एंवम तेलंगणा और आंध्रप्रदेश के लिंगायत लोक पदयात्रा निकालते है। मराठवाडे के सभी मठों के मठाधिश भी उनके क्षेत्र के लिंगायत भक्तों को एकत्रित कर पदयात्रा निकालते है। मांजरसुंबा क्षेत्र कपिलाधार के नाम से सुपरिचित है। हजारों लोक कपिलाधारा यात्रा मे सहभागी होते है। चार से पांच दिन की यह यात्रा होती है।

मराठवाडे मे सुखे की स्थिती बढ रही है। खेती का कोरडवाहु क्षेत्र अधिक है। अल्पभुधारक लिंगायतों का प्रमाण अधिक है। खेती मे काम करने का प्रमाण कम होता दिखाई देता है। इस क्षेत्र मे 100–200–500 एकर खेती लिंगायत समाज के पास थी। लेकिन बढता विभक्त कुटुम्ब और व्यसनाधिनता ने अब इतने बडी मात्रा मे खेती रहनेवाले लिंगायतों का प्रमाण कम हो गया। अन्य उपजाती के साथ रोटी–बेटी व्यवहार करनेवाला सुधारणावादी या पुरोगामी विचारधारा से प्रभावित लिंगायत समाज नही है। महात्मा बसवेश्वर के विचारधारा से पुर्णतः अनभिज्ञ लिंगायत समाज अधिक मात्रा में है। वीरशैव, हिदुवादी, वैदिक विचारधारा एंव संस्कृती का प्रभाव यहा के लिंगायतो पर है।

मराठवाडे मे लिंगायत समाज की अनेक संघटनों का निर्माण हुआ है। जिसमे अखिल भारतीय वीरशैव युवक संघटनापर (शिवा संघटना) महाराष्ट्र वीरशैव सभा, महाराष्ट्र बसव परिषद, लिंगायत सेवा संघ, बसव ब्रिगेड, बसव सेवा संघ, अखिल भारतीय लिंगायत समन्वय समिती, लिंगायत एकीकरण समिती, महाराष्ट्र लिंगायत आरक्षण संघर्ष समिती, वचन अकादमी शिवा लिंगायत युवक संघटना, बसव सेवा संघ आदि संघटना है। जिसमे महाराष्ट्र वीरशैव सभा का सभी जिलों मे का प्रभाव है। शिवा संघटनाने प्रथमतः मराठवाडे के लिंगायतो को अपने प्रश्न एंवम मांगो के प्रति सजग होकर संघर्ष करने का काम किया। एक समय इस संघटन का प्रभाव नांदेड, औरंगाबाद, उस्मानाबाद, जालना, बीड, परभणी इन जिलों में था। अब इस संघटन का प्रभाव नांदेड औरंगाबाद मे स्पष्ट रूपसे दिखाई देता है। महात्मा बसवण्णा और लिंगायत विचारधारा को माननेवाले संघटन का प्रभाव मराठवाडे मे बढ रहा है। मराठवाडे के निलंगा, लातूर, उदगीर, (शहर एंव ग्रामीण), देगलूर, उमरगा, नांदेड आदि जगहों पर अनुभवमंटप का प्रारम्भ हुआ है। जगहों जगह पर अनुभवमंटप समिती के और से वैचारिक एंव पुरोगामी विचारों के प्रचार के कार्यक्रम बढ रहे है। महाराष्ट्र बसव परिषद के प्रभाव से प्रभावित होकर अनेक साहित्यिक, संशोधाकोंने लिंगायत विचारधारा एंव संस्कृती का अध्ययन किया है। पंडीत काशिनाथ संकाये, राजेंद्र जिरोबे, डॉ. बसवलिंग पट्टदेवरू, कोणेश्वर अप्पा उस्तूरी आदि साहित्यीक और मठाधिशोंने लिंगायत समाज को महात्मा बसवण्णा और वचन साहित्य का परिचय करवाया है। महाराष्ट्र बसव परिषद की स्थापना मे मराठवाडा का योगदान प्रमुखता से है। जिसमे अडॅ. शिवराजअप्पा खंकरे, बाबुराव पांढरे महादेव कोरे, बाबुराव माशाळकर का प्रमुख योगदान है। नलेगाव, मुक्रमाबाद, देगलूर, उदगीर, लातूर आदि जगहोंपर महाराष्ट्र बसव परिषद के तालुका एंव राज्यव्यापी परिषदों ने समस्त लिंगायतों को प्रभावित किया है। उदगीर मे पिछले 40 सालों से संग्रामप्पा शेटकार स्कुल में वचन सप्ताह का आयोजन होता है। महाराष्ट्र बसव परिषद और महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय मे चलनेवाले अनुभवमंटप से प्रभावित होकर इंजि. विजय शेटे ने लिंगायत सेवा संघ नामक संघटन की स्थापना की है। लिंगायत सेवा संघ ने समस्त महाराष्ट्र के लिंगायतो के युवा वर्ग को आकर्षित एंव प्रभावी कर उनका मजबुत संघटन बनाया। जिसके कारणवश शरणों के चरित्र एंव चित्र की प्रदर्शनी, कुडलसंगम, बसवकल्याण, धारवाड, उलवी,

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved Sr. No. 64310 | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, March. 2018 | Impact Factor : 2.143

बसवनबागेवाडी, इंगलेश्वर, कोल्हापूर आलते के अल्लमप्रभु क्षेत्र से मराठवाडे के लिंगायतो को प्रभावित एंव राजनीति विज्ञान के प्रा. भिमराव पाटील के लेखन, संशोधन, व्याख्यान का बडा ही प्रभाव रहा है। इस प्रभाव से ही लातूर शहर से काशी जगदगुरू का प्रभाव कम हो रहा है। इसे ॲड. शिवानंद हैबतपूरे के बसव कथा ने ओर अधिक प्रभावित किया है। आडवी पालखी, पादपुष्प, पादपुजा से निकाला जल प्राशन करना, छुआ–छुत से सम्बधित अनेक अमानवीय प्रथा घर अकुंश लगाने मे लातूर जिले के प्रा. भिमराव पाटील, महाराष्ट्र बसव परिषद, लिंगायत सेवा संघ ने बडा ही प्रशंसनिय काम किया है। 2014 को हुई लिंगायत आरक्षण संघर्ष को मराठवाडे ने अधिक प्रभावित किया है। 2014 को 12 उपजातीयों को ओ.बी.सी. का आरक्षण दिलाने में मराठवाडे के इंजि. विजय शेटे, प्रा. भिमराव पाटील, प्रा. राजेश विभूते रवि कोरे आदि का महत्वपुर्ण योगदान है। पिछले 12 साल से सुनिल हेंगणे बसवदर्शिका के माध्यम से लिंगायत विचारधारा एंव संस्कृति को लिंगायतो के घरों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे है। जो अधिक अभिनंदनिय एंव सराहनीय है। बालाजी पिपंले का बसव सेवा संघ, मनोज राघो सर, अक्कमाहादेवी मंडल इन सभी ने लिंगायत विचारधारा का प्रचार एंव प्रसार करने का काम किया है।

लिंगायत विचारधारा, संस्कृती, महात्मा बसवण्णा का ऐतिहासिक चरित्र, वचन साहित्य आदि का प्रचार एंव प्रसार करनेवाले संशोधक, लेखक, वक्ते मराठवाडे मे अधिक है। जिसमे प्रा. भिमराव पाटील का नाम सबसे पहले एंव प्रथम श्रेणी में आता है। साथ ही इंजि. विजय शेटे, डॉ. राजशेखर सोलापूरे, रवि कोरे, प्रा.राजेश विभुते, प्रा. आनंद कर्णे, शांतीतीर्थ स्वामी, प्रा. डॉ.दत्ताहारी होनराव, श्री म.ई.तंगावार, प्रा. बाबुराव माशाळकर, प्रा. डॉ.दरगु मोदी, निलकंठ ताकबिडकर, अडॅ. शिवानंद हैबतपूरे, राजु जुबरे, डॉ. परमेश्वर धुमाल, प्रा. डॉ. शेषेराव शेटे, प्रा. डॉ. बालाजी चिरडे, प्रा. विशाल बेलूरे, दयानंद कालशेट्टी, प्रा. डॉ.रविंद्र बेम्बरे, राजू पाटील, प्रा. डॉ. लक्षटे रत्नाकर, प्रा. जवाहर चनशेट्टी, किरण कोरे, सुनिल हेंगणे, डॉ. सुनिल गताटे, प्रा. बस्वराज कोरे, डॉ. अमर सोलापूरे आदि समेत अनेक वक्ते एंव लेखक मराठवाडे मे है।

महात्मा बसवण्ण लिंगायत साहित्य और समाज पर विविध विश्वविद्यालयों में एम.फिल, पी.एच.डी. करनेवाले संशोधक भी मराठवाडे मे अधिक है। जिसमे प्रा. डॉ. लक्षटे आर. बी, डॉ. राजशखर सोलापूरे, अडॅ. डॉ. राजेश्वर डिग्गे, प्रा. डॉ. व्यकंट पाटील, सौ स्वामी, श्री. अनिल स्वामी, प्रा. डॉ. दरगु मोदी, प्रा.डॉ. सोमनाथ गुंजकर, प्रा. शंकरय्या कलीमठ, तो मराठवाडे के कुछ मठाधिशों ने भी शरण साहित्य पर संशोधन कार्य किया है। जिसमे मुखेड के मठाधिश का नाम है।

मराठवाडे में "बसव पथ" द्वैमासिक के अधिक वर्गणीदार और वाचक है। "बसव पथ" का प्रकाशन लातूर के लूल्ले प्रिंटिग प्रेस मे होता है। लिंगायत समाज के प्रश्नों और आन्दोलन को गती देनेवाले अनेक नेतागण मराठवाडे से है। जिसमे अनेक सामाजिक, राजनीतिक नेता है। जिसमे प्रा. मनोहर धोंडे, इंजि. विजय शेटे, राजाभाउ मुंडे (कलंब), शिवानंद कथले (उस्मानाबाद) उदय चौंडा (लातूर) अडॅ. अविनाश भोसिकर, प्रा. डॉ. शेषेराव शेटे, मा. आ. गंगाधर पटणे, मा. ईश्वरराव भोसीकर, हरिहरराव भोसिकर, संजय बेलगे, माधवराव मिसाले, अनिल पाटील खानापूरकर (नांदेड) प्रा. सुदर्शन बिराजदार, प्रा. संगमेश्वर पानगावे, माधवराव पाटील टाकलीकर, दयानंद पाटील, अडॅ. शिवानंद हैबतपूरे, मा. आ. मनोहर पटवारी, सुभाषअप्पा सराफ, मा. कौलखेडकर बसवराज पाटील, मा. आ. बस्वराज पाटील मुरूपकर, बाबासाहबे कोरे, गुरूनाथ बडुरे, मा. खा. शिवराजपाटील चाकुरकर, मा. खा. चंद्रकांत खैरे, बुरांडे प्रदिप, गणेश वैद्य, वैजनाथ तोनसुरे, राजू पाटील आदि।

मराठवाडे के लातूर, उस्मानाबाद, नांदेड, परभणी, औरंगाबाद, बीड, हिंगोली आदि जिलों मे लिंगायत जनसंख्या और मतदाता की संख्या अधिक रहने से यहा के राजनीति कों लिंगायत मतदाता प्रभावित करते है। मराठवाडा सें अनेक आमदार, खाजदार, नगरसेवक, नगराध्यक्ष, पंचायत समिती, सभापती, सदस्य, जिल्हापरिषद अध्यक्ष, सभापती, सदस्य, मंत्री, राज्यपाल बने है। शिवराज पाटील चाकुरकर, गंगाधर बुरांडे, चंद्रकांत खैरे, केशवकाकु क्षिरसागर यह संसद सदस्य बने है। बस्वराज पाटील मुरूडकर, मनोहर पटवारी, मल्लिनाथ महाराज औसेकर, महालिंगप्पा सांगवीकर, मनोहर पटवारी, ज्ञानराज चौगुले, सौ. आशाताई टाले, गंगाधर पटणे, ईश्वरराव भोसिकर, जयदत्त क्षीरसागर, केशरकाकु क्षीरसागर आदि महाराष्ट्र विधिमंडल के सदस्य बने है। मराठवाडे मे लिंगायत समाज का राजनीतिक प्रभाव है। बहुत से चुनाव क्षेत्र मे लिंगायत समाज के समर्थन पर राजनीति का गणित बनता और बिघडता है।

Scanned by CamScanner

ADARSH VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly Nov. 2017-Apr. 2018 | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue X Vol IV, March. 2018 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

मराठवाडे मे लिंगायत समाज बहुत है। लेकिन वह एकसंघ नही है। प्रभावी संघटन और नेतृत्व का अभाव है। व्यसनाधिनता का प्रमाण बढ रहा है। स्थलांतरितों का प्रमाण बढ रहा है। लिंगायत किसान आत्महत्या कर रहा है। लिंगायत युवा बेरोजगार है। शिक्षा का पारम्पारिक प्रमाण अधिक है। अत्यमुधारक एंव कमजोर बन रही है। लिंगायतों को लिंगायत संस्कृती और स्वतंत्र धर्म का ज्ञान नही है। फिर भी इष्टलिंग पहने और विभूती लगाने की प्रथा है। यह सभी खुद को हिंदु समझते है। जो खुद को लिंगायत समझते है, उनके व्यवहार में हिंदुवादी आचरण है। मराठवाडे के आडनाम शरण संस्कृती से मिलते है। बसवण्णा अप्पा, शरण इन लिंगायत संस्कृती से सम्बधित नाम, आडनाम है। बहुत से शिक्षणसंस्था, दुकाने, हॉटेलस चौक, सेवाभावी संस्था, वाचनालयों के नाम भी लिंगायत संस्कृति से सम्बधित है। जैसे की केतय्या स्वामी चौक (नांदेड) आदि।

मराठवाडे के लिंगायतो ने राजनीतीक, सामाजिक आन्दाल कुलगुरू, समाजसेवा, प्रशासन, प्रबोधन, प्रसार माध्यमें, उद्योग, अन्धश्रध्दा निर्मुलन, स्त्री सुधार आदि क्षेत्र में योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. घुगरे डॉ.सुर्यकांत–वीरशैव व इतर धर्म और समाज–साधना बुक स्टॉल, गडहिंग्लज–दुसरी आवृत्ती–2000–पृ.108
2. वाल्कर बेन्झामीन– हिन्दू वर्ल्ड –खंड 1–पृ.589
3. सॅलेटोद डॉ.आर.एन–एनसायक्लोपिडिया ऑफ इंडियन कल्चर – खंड–1 पृ.183
4. सिंह ओ.पी–मध्यकालिन भारत पृ.39
5. पाटील प्रा.निमराव –शरण संस्कृतीचा मराठी भुप्रदेशावरील प्रभाव–शरण साहित्य मंडळ, लातूर 2014 पृ.23
6. वही पृ.38
7. वीरूप्राक्षप्पा प्रो.बी, अनुवादक सिंहल व्रजेंद्रकुमार, प्रथमावृत्ती 2007, बसव और उनकी शिक्षाऐं–बसन समिती, बैंगलूरू–पृ.क 56

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner